सैयामी खेर बनी प्रियदर्शन की फिल्म हैवान का हिस्सा

बॉलीवुड अभिनेत्री सैयामी खेर निर्देशक प्रियदर्शन की बहुप्रतीक्षित फिल्म हैवान की शानदार स्टारकास्ट का हिस्सा बन गई हैं.

फिल्म हैवान में बॉलीवुड के दमदार सितारे अक्षय कुमार और सैफ अली खान नज़र आएंगे. फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है और इसे लेकर पहले से ही दर्शकों में उत्सुकता है. फिल्म हैवान सैयामी के लिए खास इसलिए है क्योंकि यह उनका पहला मौका है जब वह अक्षय, सैफ और प्रियदर्शन जैसे दिग्गजों के साथ काम कर रही हैं.

सैयामी ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा, हैवान के सेट पर कदम रखना मेरे लिए बेहद भावुक और खूबसूरत पल था. मुझे अब भी याद है जब मैं छोटी थी और थिएटर में बैठकर अक्षय सर को एक्शन में नए अंदाज़ में देखते हुए दंग रह जाती थी या फिर सैफ सर की कॉमेडी पर हंसते-हंसते लोटपोट हो जाती थी. तब मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन उन्हीं लोगों के साथ मैं एक ही सेट पर खड़ी रहूंगी, जिनकी फिल्में देखकर ही मैंने सिनेमा से प्यार करना सीखा था.

सलमान खान ने फिल्म इंडस्ट्री में 37 साल पूरे किये

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान ने फिल्म इंडस्ट्री में अपना शानदार 37 साल पूरा कर लिया है.

सलमान खान ने बॉलीवुड में बतौर सह कलाकार वर्ष 1988 में प्रदर्शित बीवी हो तो ऐसी से अपना डेब्यू किया था. हालांकि,1989 में प्रदर्शित सूरज बड़जात्या की मैंने प्यार किया ने सलमान खान को रातों रात नेशनल हार्टथ्रॉब बना दिया. यह फिल्म न सिर्फ सलमान बल्कि भारतीय सिनेमा में रोमांटिक ड्रामा के लिए भी गेम-चेंजर बनकर सामने आई.

इस सफलता के बाद सलमान ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और चाहे वह वांटेड और दबंग जैसी ऐक्शन एंटरटेनर्स हों, हम आपके हैं कौन.. जैसी फैमिली ड्रामा हो, या फिर बजरंगी भाईजान जैसी इमोशनल कहानी हो उन्होंने लगातार कई हिट फिल्में दीं जिसका सिलसिला आज भी जारी है.

अपने करियर की शुरुआत से ही सलमान खान ने कई टॉप फिल्ममेकर्स के साथ 100 से ज्यादा फिल्मों में काम करते हुए बहुत से अवॉर्ड्स अपने नाम किए हैं. इसके साथ ही उनके फैंस द्वारा हर साल उनकी ईद के मौके पर रिलीज होने वाली फिल्में त्योहार की तरह सेलिब्रेट की जाती हैं. यही वह कारण है कि सलमान की फिल्में अक्सर बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार कमाई करती हैं. फैंस सलमान खान की नई फिल्म बैटल ऑफ गलवान का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं. इस फिल्म को अपूर्व लाखिया द्वारा निर्देशित किया जा रहा है. इस फिल्म की कहानी 2020 के गलवान घाटी संघर्ष पर आधारित है और इसमें बहादुरी और देशभक्ति की झलक साफ दिखाई देने वाली है.

मनीष मल्होत्रा की फिल्म 'गुस्ताख इश्क' की पहली झलक रिलीज

मशहूर फैशन डिजाइनर मनीष मल्होत्रा निर्मित पहली फिल्म गुस्ताख़ इश्क़ की पहली झलक रिलीज हो गयी है.

मनीष मल्होत्रा फिल्म निर्माता के तौर पर अपनी नई पारी की शुरुआत करने जा रहे हैं. मनीष मल्होत्रा हमेशा से सिनेमा के बड़े प्रशंसक रहे हैं. बचपन में फिल्में देखकर उनके मन में रंग, संगीत और कहानी की जादूई दुनिया बस गई थी. फैशन की दुनिया में नाम बनने से पहले सिनेमा ने उनकी कल्पना को आकार दिया. मनीष अपनी पहली फिल्म 'गुस्ताख इश्क' के जरिये अपने बैनर स्टेज5 प्रोडक्शन के तहत फिल्म निर्माण में कदम रख रहे हैं.इस फिल्म के निर्देशक विभु पूरी हैं. संगीकार विशाल भारद्वाज, गीतकार, गुलजार हैं.इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह, विजय वर्मा, फातिमा सना शेख, और शरीब हाशमी की अहम भूमिका है.

मनीष मल्होत्रा ने कहा,सिनेमा के प्रति मेरा प्यार बचपन से है. रंग, संगीत और कहानियां देखकर मेरी कल्पना बनी और मुझे डिजाइनर बनने की प्रेरणा मिली. आज, फिल्म प्रोडक्शन में कदम रखना मेरे लिए उस माध्यम को कुछ वापस देने जैसा है जिसने मुझे सब कुछ दिया. स्टेड5 प्रोडक्शन के साथ हम नई कहानियों और फिल्मों के जरिए हमेशा कुछ नया और प्रेरक पेश करना चाहते हैं.यह फिल्म नवंबर 2025 में रिलीज होने वाली है.

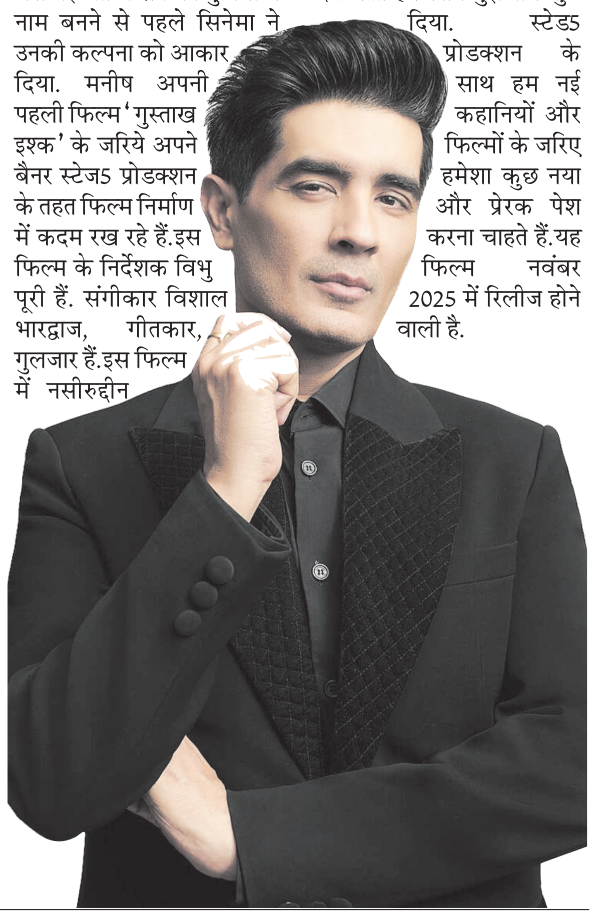

धमाकेदार एंटरटेनर फिल्म है मधारासी : रुक्मिणी वसंत

दक्षिण भारतीय फिल्म अभिनेत्री रुक्मिणी वसंत का कहना है कि उनकी आने वाली फिल्म मधारासी धमाकेदार एंटरटेनर है जिसमें एक्शन, इमोशन और सुपर-सोलफुल म्यूज़िक का परफेक्ट कॉम्बो है.

रुक्मिणी ने कहा, इतनी जल्दी तमिल ऑडियंस को फिर से एक फिल्म गिफ्ट करना मेरे लिए बड़ी ब्लेसिंग है. मीडिया और फैंस का प्यार और सपोर्ट मेरे लिए सच में स्पेशल है.

मधारासी एक धमाकेदार एंटरटेनर है जिसमें एक्शन, इमोशन और सुपर-सोलफुल म्यूज़िक का परफेक्ट कॉम्बो है. मुझे पूरा भरोसा है सबको मज़ा आएगा.

रूक्मिणी ने शिवकार्तिकेयन के साथ काम करने पर कहा, एसकेसर के साथ शूटिंग करना मेरे लिए टोटल जॉय राइड रहा. उनका टैलेंट और चार्म सब जानते हैं, लेकिन उन्हें करीब से एक्सपीरियंस करना मेरे लिए इंस्पायरिंग रहा. उन्होंने कहा, मुरुगदॉस सर की फिल्मों का मैजिक और उनकी यूनिक विज़न सबको पता है. लेकिन उनकी एनर्जी को लाइव देखना और उनके क्रिएटिव प्रोसेस का हिस्सा बनना मेरे लिए अनफॉरगेटेबल था. उन्होंने मुझ पर जो ट्रस्ट दिखाया उसके लिए मैं हमेशा ग्रेटफुल रहूंगी. मधारासी के साथ रुक्मिणी फिर से तमिल दर्शकों का दिल जीतने के लिये तैयार हैं. साथ ही उनके पास कांतारा चैप्टर 1, एनटीआर नील और टॉक्सिक जैसे बिग प्रोजेक्ट्स भी लाइनअप हैं ,जिससे वह इंडस्ट्री की मोस्ट-प्रॉमिसिंग स्टार्स में से एक बन चुकी हैं.

शिरीन फ़रहाद की तो निकल पड़ी के प्रदर्शन के 13 साल पूरे

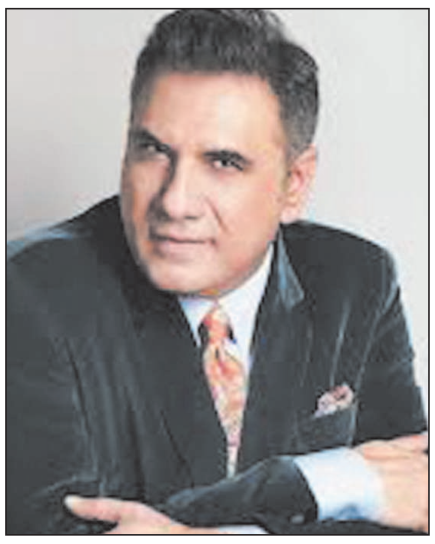

बोमन इरानी और फराह खान की फिल्म शिरीन फ़रहाद की तो निकल पड़ी के प्रदर्शन के 13 साल पूरे हो गये है.

रोमांटिक कॉमेडी शिरीन फ़रहाद की तो निकल पड़ी 24 अगस्त 2012 को रिलीज हुयी थी. इस फिल्म ने लोगों दिल जीत लिया था. आज इस फिल्म के प्रदर्शन के 13 साल पूरे होने पर कास्ट और क्रू फिर से इस फिल्म के ह्यूमर, चार्म और इमोशनल जर्नी को सेलिब्रेट कर रहे हैं.

बोमन ईरानी ने अपनी यादें ताज़ा करते हुए कहा, कुछ फ़िल्में किरदार की वजह से ख़ास होती हैं, कुछ लोगों की वजह से शिरीन फ़रहाद की तो निकल पड़ी दोनों थी. फ़रहाद बनना, शिरीन यानी फ़राह ख़ान के साथ पेयर-अप होना और बेला भंसाली सहगल का डायरेक्शनज ये सफ़र अविस्मरणीय था. कॉमेडी भी, दिल भी सब कुछ पैक था इसमें. आज इसे फिर सेलिब्रेट करके मज़ा ही आ गया!

बेला भंसाली सहगल के निर्देशन में बनी इस फिल्म ने बोमन और फ़राह को ऑनस्क्रीन एक अनएक्सपेक्टेड लेकिन आइकॉनिक जोड़ी बना दिया. ज़िंदगी के लेट-लव की वॉर्म स्टोरी और स्लाइस-ऑफ़-लाइफ़ ह्यूमर ने इसे कल्ट फेवरेट बना दिया.

अनीत पड्डा ने पार्श्वगायन किया

बॉलीवुड की नवोदित अभिनेत्री अनीत पड्डा ने पार्श्वगायन किया है. अनीत पड्डा बहुमुखी प्रतिभा की धनी कलाकार हैं. उन्होंने फिल्म सैयारा में अपनी शानदार अभिनय कला से भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सबका दिल जीत लिया है. कल रात उन्होंने अपनी गायकी की झलक दिखाकर इंटरनेट पर तहलका मचा दिया.

सैयारा में अनीत ने वाणी बत्रा का किरदार निभाया है.उन्होंने कल रात एक अनप्लग्ड वर्ज़न अपलोड किया, जिसमें उन्होंने कृष कपूर (अहान पांडे द्वारा निभाया गया किरदार) के लिए लिखी अपनी कविता सैयारा गाई. सुबह तक यह वीडियो 7.8 मिलियन व्यूज़, 8.71 लाख लाइक्स, 14.3 हज़ार कमेंट्स और लगभग 48 हज़ार शेयर्स के साथ सोशल मीडिया पर छा गया है.

किरदार साथ न्याय करने के लिए अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकला : रजत वर्मा

अभिनेता रजत वर्मा का कहना है कि सोनी सब के शो इत्ती सी खुशी में अपने किरदार विराट के साथ न्याय करने के लिए उन्हें अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलना पड़ा.

सोनी सब का हाल ही में लॉन्च हुआ शो 'इत्ती सी खुशी' अपनी भावुक कहानी और रिश्तों की सच्चाई को दर्शाते किरदारों के कारण दर्शकों के दिल जीत रहा है. अपनी बॉय-नेक्स्ट-डोर इमेज के लिए पहचाने जाने वाले रजत वर्मा इस बार एक नए रूप में नज़र आ रहे हैं,ज़्यादा फिट, डिफ़ाइंड और आत्मविश्वास से भरपूर. अपने किरदार विराट को वास्तविक और दमदार बनाने के लिए उन्होंने मसल्स बढ़ाने और शारीरिक रूप से मजबूत बनने पर कड़ी मेहनत की है.

भले ही रजत कभी भी वर्कआउट या जिम में घंटों बिताने के शौकीन नहीं रहे, लेकिन उन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया और अपनी तैयारी का अहम हिस्सा बना लिया. अनुशासित वर्कआउट से लेकर डाइट पर ध्यान देने तक,उन्होंने खुद को पूरी तरह

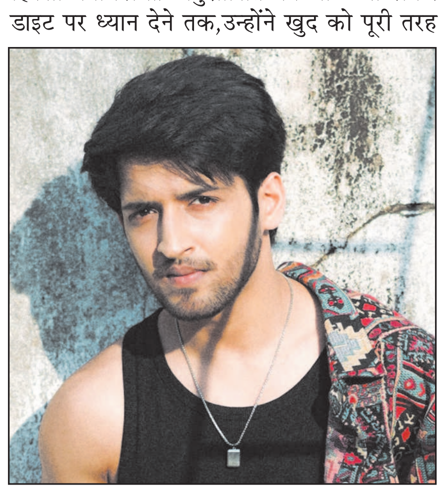

किरदार में ढालने का प्रयास किया है.

रजत वर्मा ने कहा , ्रजब मुझे पहली बार विराट का रोल सुनाया गया, तभी मुझे समझ आ गया था कि यह अब तक किए गए मेरे सभी किरदारों से अलग होगा.

कृषि जगत

सावधान! मक्का-बाजरा पर फॉल आर्मी वर्म कीट का खतरा

मॉनसून के मौसम में हो रही बारिश और आसमान में छाए बादलों के कारण मक्का और बाजरे की फसलों पर एक खतरनाक कीट 'फाल आर्मी वर्म' का हमला तेजी से बढ़ रहा है. यह कीट मक्के और बाजरे का सबसे बड़ा दुश्मन है, जो रातों-रात पूरी फसल को बर्बाद कर सकता है.

यह कीट पत्तियों को खाकर पौधे की बढ़त को रोक देता है, जिससे फसल को भारी नुकसान हो सकता है. इसकी सुंडियां एक फौज की तरह लाखों की संख्या में एक खेत से दूसरे खेत की ओर बढ़ती हैं और रास्ते में आने वाली हर फसल को चट कर जाती हैं. फॉल आर्मी वर्म मूल रूप से अमेरिका का कीट है, अगर इसे मक्का या बाजरा नहीं मिलता तो यह गन्ना, धान, गेहूं, और सब्जियों जैसी फसलों पर भी हमला कर देता है.

इस खतरनाक कीट की पहचान कैसे करें?- फसल को बचाने के लिए कीट की सही समय पर पहचान करना सबसे ज़रूरी है. इसे तीन अवस्थाओं में पहचाना जा सकता है. मादा कीट पत्तियों की निचली सतह पर झुंड में सैकड़ों अंडे देती है. ये अंडे रोयेंदार परत से ढके होते हैं और हल्के भूरे रंग के दिखते हैं. इस कीट की सूंडी अवस्था फसल के लिए सबसे विनाशकारी है. इसकी पहचान सबसे ज़रूरी है. इसके सिर पर उल्टे 'ड्ड' अक्षर का सफ़ेद निशान बना होता है. यह सुंडी चिकनी और हरे, भूरे इसका पतंगा भूरे रंग का होता है.

सितंबर-अक्टूबर में करें ग्लैडियोलस की खेती

ग्लैडियोलस एक ऐसा फूल है, जिसकी बाजार में भारी मांग और आसान खेती के कारण किसान कम समय में शानदार मुनाफा कमा सकते हैं. शादी-ब्याह, त्योहारों और स्वागत समारोह में गुलदस्ते, बुके के लिए इसकी सबसे ज्यादा मांग होती है. वर्तमान में, भारत में फूलों की खेती में क्षेत्रफल और उत्पादन के मामले में ग्लैडियोलस तीसरे स्थान पर है. ग्लैडियोलस मुख्य रूप से सर्दियों में उगाया जाने वाला फूल है, लेकिन मध्यम जलवायु वाले क्षेत्रों में इसकी खेती लगभग पूरे साल की जा सकती है. इसकी बुआई का सबसे अच्छा समय सितंबर-अक्टूबर से लेकर नवंबर-दिसंबर तक होता है.

लोकप्रिय किस्में और खाद-उर्वरक - वैसे तो ग्लैडियोलस की हजारों किस्में हैं, लेकिन बाजार की मांग के अनुसार रंगों का चुनाव करना सबसे बेहतर होता है. मुख्य रूप से पीले, सफेद, गुलाबी और लाल रंग के फूलों की मांग सबसे ज्यादा रहती है. मैदानी इलाकों में खेती के लिए कुछ प्रमुख किस्में हैं-स्नो क्वीन, सिल्विया, एपिस ब्लासम अग्नि, रेखा, पूसा सुहागिन, नजराना आरती, अप्सरा, शोभा, सपना और पूनम इसकी बेहतर किस्में हैं. इसकी खेत की तैयारी के समय प्रति एकड़ 5 से 6 टन अच्छी सड़ी हुई कंपोस्ट खाद, 80 किलो नाइट्रोजन, 160 किलो फास्फोरस और 80 किलो पोटाश की जरूरत होती है. इन उर्वरकों को देने का सही तरीका यह है कि बुवाई के समय खेत में कंपोस्ट, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा मिला दें. इसके साथ, नाइट्रोजन की कुल मात्रा का केवल एक-तिहाई (?) हिस्सा ही बेसल डोज के रूप में डालें. शेष बची हुई नाइट्रोजन को दो बराबर हिस्सों में बांटकर टॉप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए.

कंदों की रोपाई का सही तरीका- ग्लैडियोलस की बुआई इसके कंद (बल्ब) से होती है, जो आलू की तरह दिखते हैं. एक एकड़ खेत में रोपाई के लिए लगभग 60,000 कंदों की जरूरत होती है. रोपाई से पहले कंदों को फफूंदनाशक से उपचारित करना बेहद जरूरी है. इसके लिए 0.2त्न कार्बेंडाजिम के घोल में कंदों को डुबोकर शोधन करें.

ग्लैडियोलस की खेती मुनाफे का सौदा

ग्लैडियोलस की खेती मुनाफे का एक बेहतरीन सौदा है, खासकर दूसरे साल से. पहले साल, प्रति एकड़ की खेती में लगभग 2 लाख रुपये की कुल लागत आती है, क्योंकि प्रारंभिक निवेश कंद (बल्ब) खरीदने में अधिक होता है. यह फसल सिर्फ 90 दिनों में तैयार हो जाती है और इससे लगभग 3 लाख रुपये की कमाई होती है, जिससे किसान को पहले साल में करीब 1 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा मिलता है.

बीजामृत, घर पर बनाना है बहुत ही आसान

खेती में अच्छी क्वालिटी और हेल्दी फसल लेने के लिए बीजोपचार करना बहुत ज़रूरी होता है. आजकल किसान भाई बीजोपचार के लिए रासायनिक दवाओं का उपयोग करते हैं, जिसमें काफी खर्चा आता है. लेकिन बीजामृत एक ऐसा प्राकृतिक, और सस्ता जैविक घोल है, जिसे हम घर पर ही आसानी से बना सकते हैं.

बीजामृत क्या है?- बीजामृत एक जैविक घोल है, जिसका उपयोग बीज उपचार के लिए किया जाता है. इसके इस्तेमाल से बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ती है, पौधे स्वस्थ रहते हैं और बीज व मिट्टी जनित रोगों से सुरक्षा मिलती है.

बीजामृत बनाने के लिए क्या-क्या चाहिए- स्थानीय गाय का गोबर - 5 किलो, गाय का गोमूत्र - 5 लीटर, गाय का दूध - 1 लीटर, चूना - 50 ग्राम, पानी - 20 लीटर, बीज - 100 किलो, मिट्टी - 50 ग्राम (बेहतर असर के लिए बरगद के पेड़ की जड़ के पास की मिट्टी)

बीजामृत बनाने की विधि

स्टेप 1 = गोबर का रस तैयार करना सबसे पहले एक बर्तन में 20 लीटर पानी लें.

अब 5 किलो गाय का गोबर एक कपड़े में बांधकर पानी में 12 घंटे तक डुबोकर रखें.

स्टेप 2 = चूने का घोल बनाना 50 ग्राम चूना 250 मिलीलीटर पानी में घोलकर रातभर के लिए अलग रख दें. चूना गोमूत्र की अम्लीयता को संतुलित करने में मदद करता है और घोल का श्च॥ स्तर ठीक रखता है.

स्टेप 3 = बीजामृत घोल तैयार करना 12 घंटे बाद गोबर की पोटली को निकालकर अच्छी तरह निचोड़ लें. इस गोबर के पानी में 5 लीटर गोमूत्र और 1 लीटर दूध मिलाकर लकड़ी की डंडी से अच्छे से चलाएं. अब इसमें रातभर रखा चूने का घोल डालें और फिर से अच्छी तरह मिलाएं.

आपका बीजामृत घोल तैयार है. इसे 24 घंटे के अंदर उपयोग कर लेना चाहिए. बीजामृत कैसे इस्तेमाल करें जिन बीजों को बोना है, उन्हें जूट की बोरी या ज़मीन पर बिछा दें. बीजों को बीजामृत घोल में 30 मिनट तक डुबोकर रखें. इसके बाद बीजों को छांव में सुखाएं और तुरंत बो दें.

बीजामृत के फायदे- रासायनिक दवाओं की तुलना में बहुत सस्ता. बनाने में कम समय और मेहनत. बीज तेज़ी से और अधिक संख्या में अंकुरित होते हैं. बीज और मिट्टी जनित रोगों से सुरक्षा मिलती है.

बीजामृत के इस्तेमाल में सावधानियां- बीजामृत में उपचार के 1 घंटे बाद ही बीज बोएं. चूना हमेशा पहले पानी में घोलें और इसे अंत में मिलाएं. बीजामृत किसानों के लिए एक प्राकृतिक, सस्ता और प्रभावी समाधान है, जो बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ाकर फसल की उपज और गुणवत्ता दोनों में सुधार करता है.

दुनिया की सबसे छोटी नस्ल वाली गाय

क्या आपने कभी ऐसी गायों के बारे में सुना है जो दिखने में छोटी सी हों लेकिन दूध और मुनाफा देने में जबरदस्त? जी हां, दुनिया में कुछ खास गाय हैं जो अपने छोटे कद, कम देखभाल और बेहतरीन दूध देने के लिए जानी जाती हैं. इनका आकार भले ही छोटा हो, लेकिन इनका महत्व बहुत बड़ा है. ये गाय कम जगह में आसानी से पाली जा सकती हैं, इन्हें ज्यादा चारे की जरूरत नहीं होती और इनका स्वभाव भी बेहद शांत होता है.

पुंगनूर गाय- पुंगनूर छोटी गायों में बहुत मशहूर है. आंध्र प्रदेश की पुंगनूर गाय काफी छोटी होती है लेकिन बहुत ताकतवर होती है. इसका दूध बहुत पौष्टिक होता है और फैट कंटेंट ज्यादा होने से घी और मक्खन बनाने में भी बहुत उपयोगी है. यह गाय कम चारे और देखभाल में भी अच्छे परिणाम देती है. गर्म जलवायु में भी यह आसानी से रह सकती है. बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी के आवास में भी पुंगनूर गाय का पालन होता है.

वेचुर गाय- केरल की वेचुर गाय को दुनिया की सबसे छोटी गाय माना जाता है. इसका आकार जितना छोटा है, गुण उतने ही बड़े होते हैं. इसका दूध आसानी से पचने वाला होता है क्योंकि इसमें ׂ2 बीटा-केसीन की मात्रा अधिक होती है. ये गाय गर्मी और बीमारियों को आसानी से झेल सकती है और इनका पालन आसान होता है. छोटे किसान इन्हें बहुत पसंद करते हैं क्योंकि ये कम खर्च में अच्छी आमदनी देती हैं.

पांडा गाय- पांडा गाय बहुत ही दुर्लभ और दिखने में काफी आकर्षक होती है. इसका रंग और निशान पांडा की तरह होते हैं, जिससे इसका नाम पांडा पड़ा है. ये गाय आमतौर पर पालतू जानवर या पेंटिंग चिड़ियाघरों में रखी जाती है. इनका स्वभाव बहुत दोस्ताना होता है. इनकी सुंदरता के कारण इनकी मांग हमेशा बनी रहती है.